Dr. Awadh Bihari Puran
Department of Hindi
A.M.A. College, [illegible] (K.U.) Jharkhand

(1)

काव्य - गुण

शब्दकोश में गुण का अर्थ उत्तमता, विशेषता, आकर्षण अथवा शोभाकारी धर्म, दोषाभाव आदि है। काव्यशास्त्र में इनका उपयोग दोषाभाव एवं काव्य के शोभावर्द्धक धर्म के अर्थों में किया जाता है।

आचार्य भरतमुनि ने दोष विपर्यय को गुण कहकर अभिहित किया है – "एत एव विपर्यस्ता : गुणा : काव्येषु कीर्तिता :। आचार्य वामन गुणों को काव्य के शोभाकारक धर्म के रूप में स्वीकार करते हैं। उनका मत भेदवादी है और वे गुण और अलंकार में भेद मानते हैं –

" काव्यशोभाया: कर्तारो धर्मा: गुणा:। तदतिशयहेतवस्त्वलंकारा।

ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य आनन्दवर्धन ने गुणों को रसाश्रित रहनेवाले धर्म के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने बताया है कि गुण रस के धर्म हैं, जबकि अलंकार शब्द और अर्थ के धर्म होते हैं। इनका भेद प्रदर्शित करते हुए स्पष्ट रूप से कहा है –

"तमर्थमवलम्बन्ते येऽङ्गिनं ते गुणा: स्मृता।
अंगाश्रितास्त्वलंकारा, मन्तव्या। कटकादिवत्॥

काव्य गुण तीन प्रकार के होते हैं :

(1) माधुर्य गुण (2) ओज गुण (3) प्रसाद गुण

माधुर्य गुण

माधुर्य गुण की 'मधुर' भाववाची संज्ञा है। चित्त की द्रुति रूप आह्लाद (ऐसा आनंद विशेष) जिससे अन्तःकरण द्रवित हो जाय, माधुर्य गुण कहलाता है। श्रृंगार, करुण एवं शांत रसों के लिए यह गुण बहुत उपयुक्त होता है। सुकुमारता एवं मधुरता की रक्षा करने के लिए इसमें ट, ठ, ड, द आदि कर्कश ध्वनियों का विधान नहीं किया जाता और इसे मात्र कोमल ध्वनियों के द्वारा ही व्यक्त किया जाता है। 'क' से लेकर 'म' तक सभी स्पर्श वर्णों का विधान इसमें इस प्रकार किया जाता है कि पंचम वर्ण पहले आए और स्पर्श उसके पश्चात। माधुर्य गुण जटिल सामासिकता के कुटिल बंधन से सर्वथा मुक्त रखा जाता है। समास यदि होता भी है तो बहुत थोड़ा। रचना में माधुर्य सर्वत्र व्याप्त रहता है।

उदाहरण :

"कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन राम हृदय गुनि।
मानहु मदन दुन्दुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही॥

इस उदाहरण में अनुस्वार युक्त तथा मधुर वर्णों के प्रयोग से श्रृंगार के उपयुक्त माधुर्य गुण का सन्निवेश हुआ है।

उदाहरण —

Dr. Awadh Bihari Puran
Department of Hindi
A.B.M. College, JSR. (K.U.) Jharkhand

मन्द - मन्द मुरली बजावत अधर धरे,
मन्द - मन्द निकस्यो मुकुन्द मधु-बन तें।

ओज - गुण

ओज का शाब्दिक अर्थ तेज, प्रताप अथवा दीप्ति है। जिस काव्य को सुनने अथवा पढ़ने से मन में ओज, तेज, उत्साह, साहस, पौरुष, वीरता, आवेश इत्यादि का संचार हो, उसे 'ओज गुण' कहते हैं। मम्मट के अनुसार वीर, वीभत्स तथा रौद्र रसों के लिए उपयुक्त ओज गुण में वर्णों की संयुक्ताक्षरता ट, ठ, ड, ढ तथा श और ष आदि ध्वनियों का बहुत प्रयोग, दीर्घ सामासिक पद आवश्यक है।

उदाहरण :-

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

जयशंकर प्रसाद के इस प्रयाण गीत में 'ओज गुण' विद्यमान है।

प्रसाद गुण

'प्रासाद' शब्द 'प्र' उपसर्ग तथा घञ् प्रत्यय के योग से निष्पन्न है जिसका अर्थ होता है, प्रसन्नता, स्वच्छता, सुस्पष्टता, कृपा और प्रांजलता। प्रसाद वह गुण है जिससे मण्डित होने पर काव्य के श्रवण के साथ ही श्रोता उसका मर्म हृदयंगम कर लेता है। प्रसाद गुण में अर्थ वैसे ही रहता है; जैसे सूखे ईंधन में अग्नि। सरल शब्दावली का प्रयोग प्रसाद गुण का मुख्य व्यंजक है। उदाहरण —

कुछ भी बन, बस कायर मत बन!
ठोकर मार पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन।
कुछ भी बन, बस, कायर मत बन!

— (नरेन्द्र शर्मा)

स्पष्टीकरण — इस उदाहरण में बिल्कुल सरल, सहज, शब्दों का प्रयोग हुआ है और भाव स्वतः स्पष्ट है। अतः इस पद में प्रसाद गुण है।

1. माधुर्य गुण — ~~द्रुति~~ द्रुति।
2. ओज गुण — दीप्ति।
3. प्रसाद गुण — व्याप्ति।

Dr. Awadh Bihari Puran
Department of Hindi
A.B.M College, JSR. (K.U.) Jharkhand

शब्द - शक्ति

शब्द का अर्थबोध कराने वाली शक्ति को 'शब्दशक्ति' कहते हैं। शब्दशक्ति शब्द के अर्थ का बोध कराने वाला व्यापार है। दूसरे शब्दों में, जिस शक्ति द्वारा शब्द का अर्थ-बोध होता है, उसे शब्दशक्ति कहते हैं।

प्रमुखतया शब्द तीन प्रकार के होते हैं - वाचक शब्द, लक्षक शब्द और व्यंजक शब्द। वाचक शब्द से वाच्यार्थ, लक्षक शब्द से लक्ष्यार्थ और 'व्यंजक' शब्द से व्यंग्यार्थ प्रकट होता है। शब्द से अर्थ - ग्रहण करने के व्यापार भी तीन होते हैं।

1. अभिधा
2. लक्षणा
3. व्यंजना

Dr. Awadh Bihari Puran
Department of Hindi
A.B.M. College, JSR. (K.U.) Jharkhand

वाचक शब्द से वाच्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति 'अभिधा' है। लक्षक शब्द से लक्ष्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति 'लक्षणा' है। व्यंजक शब्द से व्यंग्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति 'व्यंजना' है।

अभिधा शब्द शक्ति

साक्षात सांकेतिक (सीधा-सादा निश्चित) अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति को 'अभिधा' कहते हैं। साक्षात सांकेतिक अर्थ से तात्पर्य शब्द के साधारण प्रचलित, मुख्य या प्रसिद्ध अर्थ से है। इसको 'प्रथमा' एवं 'मुख्या' शक्ति भी कहते हैं। अभिधा शब्दशक्ति के द्वारा मुख्यार्थ या वाच्यार्थ का बोध होता है। जैसे - मरुभूमि से जीवन दूर है।

यहाँ अभिधा शक्ति से जीवन का अर्थ जल है।

अभिधा शब्द शक्ति के द्वारा जिन शब्दों का अर्थ बोध कराया जाता है। उसके तीन प्रकार हैं - 1. रूढ 2. यौगिक 3. योगरूढ।

रूढ शब्द : जिन शब्दों के खण्ड न हों, सम्पूर्ण शब्द एक ही अर्थ प्रकट हो, उन्हें रूढ शब्द कहते हैं। तात्पर्य है कि इसमें प्रकृति-प्रत्यय के अर्थ की अपेक्षा नहीं होती। जैसे भेड़, गाय, घोड़ा, चन्द्रमा आदि।

यौगिक शब्द : प्रत्यय, कृदन्त, समास इत्यादि के संयोग से बने वे शब्द जो समुदाय के अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं। इन शब्दों की शास्त्रीय प्रक्रिया द्वारा व्युत्पत्ति संभव होती है। जैसे - दिवाकर, पाठशाला, वृषभानुजा आदि।

योगरूढ शब्द : जो शब्द यौगिक की प्रक्रिया से बने हो किंतु उनका एक निश्चित अर्थ रूढ हो गया हो, उन्हें योगरूढ शब्द कहते हैं। जैसे - जलज का अर्थ है -

(2) जल में उत्पन्न वस्तु परन्तु यह 'कमल' के लिए गया है।

लक्षणा शब्द-शक्ति

मुख्यार्थ बाधित होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन कारण मुख्यार्थ से संबंधित अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) का बोध कराने वाली शब्दशक्ति 'लक्षणा' शब्दशक्ति है। वस्तुतः लक्षणा शब्दशक्ति वहाँ होती है, जहाँ:-

1. मुख्यार्थ की बाधा हो,
2. मुख्यार्थ से संबंधित लक्ष्यार्थ हो,
3. रूढ़ि अथवा प्रयोजन हो।

Dr. Awadh Bihari Puran
Department of Hindi
A.B.M. College, JSR. (K.U.) Jharkhand

काव्यप्रकाशकार 'मम्मट' ने इसे इस प्रकार परिभाषित किया है-

"मुख्यार्थ बाधे तद्योगे रूढ़ितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया॥"

लक्षणा शब्दशक्ति का उदाहरण —
सिंह अखाड़े में उतरा।
महाराष्ट्र साहसी है।

इन दोनों उदाहरणों में लक्षणा शब्द-शक्ति है। किंतु वीर पुरुष के लिए और 'महाराष्ट्र' महाराष्ट्र वासियों के लिए यहाँ रूढ़ हो गया है।

लक्षणा के प्रमुख भेद

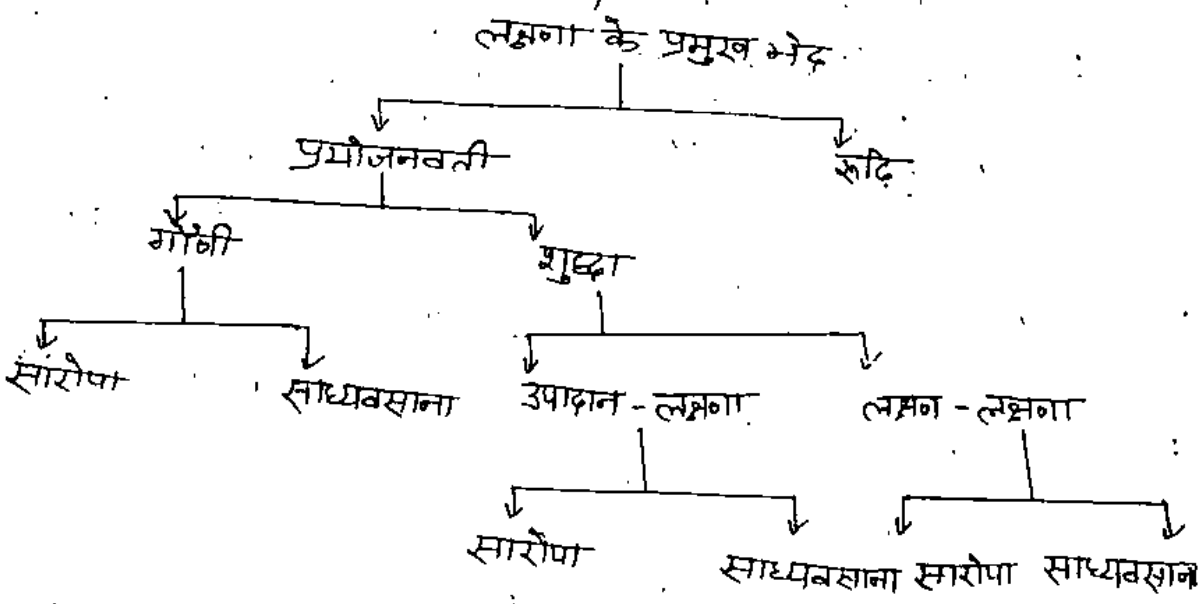

प्रयोजनवती लक्षणा— जहाँ किसी विशेष प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ को बाधित करके उससे संबंधित लक्ष्यार्थ का बोध होता है, वहाँ प्रयोजनवती लक्षणा होती है। जैसे - "गंगा पर ग्राम है।"

यहाँ गंगा का मुख्यार्थ (गंगा के जल की धारा) बाधित है क्योंकि गंगा की धारा में गाँव नहीं हो सकता। लक्ष्यार्थ है - गंगा का तट। तट का मुख्यार्थ से सामीप्य संबंध है। गंगा का तट अर्थ (लक्ष्यार्थ) गाँव को पवित्र करने का

जने कारण होने से यहाँ प्रयोजन...

रूढ़ि लक्षणा :- जहाँ केवल रूढ़ि के सहारे (मुख्य अर्थ को छोड़कर) मुख्यार्थ से संबंधित दूसरा अर्थ (लक्ष्यार्थ) लिया जाता है, वहाँ रूढ़ि लक्षणा होती है, जैसे -

'महाराष्ट्र साहसी है,'

उपर्युक्त वाक्य मे 'महाराष्ट्र' का मुख्यार्थ है - महाराष्ट्र प्रांत। यहाँ इस अर्थ की बाधा है क्योंकि महाराष्ट्र प्रांत तो जड़ है, उसमे साहस कैसे होगा! लक्ष्यार्थ लिया जाएगा - महाराष्ट्र प्रांत के निवासी। यहाँ आधार - आधेय संबंध की दृष्टि से लिया गया है। महाराष्ट्र प्रांत आधार है, निवासी आधेय। यह अर्थ लेने में रूढ़ि कारण है। महाराष्ट्र निवासियों को महाराष्ट्र कहने की रूढ़ि है। रूढ़ि कारण (लक्ष्यार्थ) होने से यहाँ 'रूढ़ि लक्षणा' मानी जाती है।

गौणी लक्षणा :- जिसमे सादृश्य संबंध से अर्थात समान गुण या धर्म के कारण लक्ष्यार्थ का बोध होता है उसे गौणी लक्षणा कहते हैं। जैसे - मुख चन्द्र है।

मुख को चन्द्र इसलिए कहते है कि चन्द्र मे जैसी चमक है वैसी ही मुख मे भी है, चन्द्र को देखकर जैसे हृदय आह्लादित होता है वैसे ही मुख को देखकर भी। इस प्रकार चन्द्र और मुख मे सादृश्य संबंध (समानता) होने के (मुख चन्द्र है" यह प्रयोग होता है) कारण यहाँ गौणी लक्षणा है।

शुद्धा लक्षणा :- सादृश्य से भिन्न जितने संबंध हैं वे शुद्धा लक्षणा हैं। सादृश्येतर संबंध निम्नलिखित हैं -

1. आधाराधेय भाव
2. सामीप्य
3. तात्कर्म्य
4. वैपरीत्य आदि।

Dr. Awadh Bihari Puran
Department of Hindi
A.B.M. College, JSR. (K.U.) Jharkhand

जैसे - 'महात्मा गाँधी को देखने के लिए सारा शहर उमड़ पड़ा।' इस वाक्य में अर्थ की असंगति है। 'शहर निर्जीव पदार्थ है, उसे न तो गाँधी जी को देखने की इच्छा हो सकती है और न चलकर वह गाँधी जी के पास जा सकता है। अतः यहाँ 'शहर' और 'निवासी' में ~~आधा~~ का मुख्यार्थ बाधित होता है उसे छोड़कर 'शहर' का लक्ष्यार्थ 'शहर के निवासी' से लिया जाता है। 'शहर' और निवासी में आधाराधेय भाव संबंध है - 'शहर' आधार है और 'निवासी' आधेय (उसमे रहनेवाले)। चूंकि यहाँ (सादृश्य से भिन्न) आधाराधेय

(4). भाव समझना है, अतः शुद्धा लक्षणा है।
शुद्धा लक्षणा भी दो प्रकार की होती है -

1. उपादान लक्षणा :- जहाँ मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ दोनों रहते हैं वहाँ उपादान लक्षणा होती है। (उपादान का अर्थ है ग्रहण करना। अर्थात् जहाँ लक्ष्यार्थ के साथ मुख्यार्थ का भी ग्रहण हो।)

जैसे - 'लालपगड़ी के आते ही वह नौ दो ग्यारह हो गया।'

इस वाक्य में लालपगड़ी का मुख्यार्थ लेने में बाधा है, लालपगड़ी को देखकर कोई नहीं भागता, लालपगड़ी सड़क पर पड़ी हो तो उसे देखकर कोई थोड़े ही भागेगा। यहाँ लालपगड़ी से तात्पर्य 'लालपगड़ीधारी' सिपाही से है। तो लालपगड़ी का लक्ष्यार्थ 'लालपगड़ी-धारी' है। इस लक्ष्यार्थ (लालपगड़ीधारी) में मुख्यार्थ (लालपगड़ी) का भी उपादान (ग्रहण) हो रहा है। लालपगड़ी कहने से लालपगड़ीधारी का ही बोध होता है पीली या नीली पगड़ीधारी का नहीं। अतः यहाँ उपादान लक्षणा है।

लक्षण लक्षणा :- जब मुख्यार्थ बिल्कुल ही छोड़ दिया जाय और लक्ष्यार्थ ही लिया जाय तब लक्षण-लक्षणा होती है। जैसे - 'वह पढ़ाने में बहुत कुशल है।'

कुशल का मुख्यार्थ है कुश लाने वाला। पर यहाँ इसका अर्थ हम लेंगे कि वह पढ़ाने में कुशल है, यहाँ कुशल का अर्थ निपुण लिया गया है अर्थात् मुख्यार्थ को छोड़ दिया गया है। (इस वाक्य में कुशल का मुख्यार्थ (कुश लानेवाला) बिल्कुल छोड़ दिया गया है, उसका केवल लक्ष्यार्थ (निपुण) अभीष्ट है। मुख्यार्थ का ग्रहण नहीं होने से यह लक्षण-लक्षणा हुई।)

Dr. Awadh Bihari Puran
Department of Hindi
A.B.M. College, JSR. (K.U.) Jharkhand

सारोपा लक्षणा - सारोपा का अर्थ है आरोप के साथ। आरोप तब होता है जब हम दो वस्तुओं में अभेद बताते हैं। इस प्रकार (जहाँ विषय और विषयी में अर्थात् उपमेय और उपमान में अभेद बताया जाय वहाँ सारोपा लक्षणा होती है। रूपक अलंकार में सारोपा लक्षणा होती है।

जैसे- मुख चंद्र है

यहाँ मुख (उपमेय) और चन्द्र (उपमान) दोनों में अभेद कथन है। विषय -विषयी, दोनों का कथन होने से सारोपा लक्षणा है।

साध्यवसाना लक्षणा :- जहाँ विषय -विषयी में से केवल (उपमान) विषयी का ही कथन हो वहाँ साध्यवसाना लक्षणा होती है। रूपकातिशयोक्ति अलंकार में साध्यवसाना लक्षणा होती है। जैसे कोई किसी रमणी के मुख की ओर इशारा करके कहे कि 'चाँद निकला' तो यहाँ विषय

६ (मुख) का निर्देश नहीं है, केवल विजयी।
का निर्देश है, अतः साध्यवसाना लक्षणा हुई।

Dr. Awadh Bihari Puran
Department of Hindi
A.B.M. College, JSR. (K.U.) Jharkhand

व्यंजना शब्दशक्ति

अभिधा और लक्षणा शब्दशक्ति के असमर्थ होने पर जिस शब्दशक्ति से अभीष्ट अर्थ 'व्यंग्यार्थ' की प्राप्ति हो, उसे व्यंजना शब्दशक्ति कहते हैं। वस्तुतः जब अभिधा और लक्षणा शब्दशक्ति से किसी शब्द का अर्थ प्राप्त नहीं होता तब शब्द की तीसरी शक्ति आकर व्यंग्यार्थ प्रकट करती है, उसे व्यंजना शब्दशक्ति कहते हैं। व्यंग्यार्थ प्रधान काव्य को ही 'ध्वनि काव्य' कहकर आचार्यों ने इसे उत्तम कोटि का काव्य माना है। जैसे – 'सूरज डूब गया'

इसका वाच्यार्थ (मुख्यार्थ), जो अभिधा से प्राप्त होता है केवल एक है कि सूर्यास्त हो गया किन्तु वक्ता-श्रोता के अनुसार इसके व्यंग्यार्थ अनेक हो सकते हैं।

मंदिर का पुजारी यदि अपने चेले से कहता है कि 'सूरज डूब गया' तो इसका अर्थ होगा कि 'दीप जलाओ' 'आरती वंदन की तैयारी करो।'

यदि निर्जन मार्ग पर जाता हुआ राही अपने साथी से कहता है कि 'सूरज डूब गया' तो अर्थ होगा कि कहीं पास के पड़ाव में टिक रहना चाहिए, ~~यदि हल चलाते हुए किसान~~ अंधेरे में चलना ठीक नहीं। यदि यही वाक्य एक चोर दूसरे चोर से कहता है तो अर्थ होगा कि चोरी का सरोसमान ठीक करना चाहिए। यदि हल चलाते हुए किसान से कोई कहता है कि 'सूरज डूब गया' तो इसका अर्थ हुआ कि 'अब हल चलाना बन्द करो'।

व्यंजना के दो भेद माने गए हैं –

1. शाब्दी 2. आर्थी

शाब्दी व्यंजना :– जब व्यंग्य किसी शब्द विशेष के ऊपर निर्भर करता है वहाँ शाब्दी व्यंजना होती है। दूसरे शब्दों में शाब्दी व्यंजना वहाँ होती है जहाँ अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग होता है। अर्थात जहाँ अनेकार्थक शब्दों से व्यंग्यार्थ निकलता है, वहाँ शाब्दी व्यंजना होती है, जैसे –

चिर जीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर॥
– बिहारी

(6) यहाँ राधा और कृष्ण की जोड़ी के वर्णन के साथ एक अन्य अर्थ की भी प्रतीति होती है - गाय और साँड़ की जोड़ी की। यह प्रतीति 'वृषभानुजा' और 'हलधर के वीर' इन दो अनेकार्थक शब्दों की सहायता से होती है। 'वृषभानुजा' का एक अर्थ है वृषभानु की पुत्री (वृषभानु + जा) और दूसरा अर्थ है गाय (वृषभ + अनुजा), ऐसे ही 'हलधर के वीर' का एक अर्थ है बलराम (हलधर) के भाई (वीर) अर्थात् कृष्ण और दूसरा अर्थ है साँड़।

अनेकार्थक शब्दों से व्यंग्यार्थ की प्रतीति होने से यहाँ शाब्दी व्यंजना है।

Department of Hindi
A.B.M. College, JSR. (K.U.) Jharkhand

आर्थी व्यंजना :- जहाँ व्यंग्यार्थ किसी शब्द पर निर्भर न होकर शब्द के अर्थ द्वारा व्यंजित होता है, वहाँ आर्थी व्यंजना होती है। इसमें शब्द परिवर्तन कर देने पर भी व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती रहती है।

जैसे - संध्या हो गयी।

यहाँ वाच्यार्थ है - सूर्यास्त का समय हो गया किंतु यहाँ पर व्यंग्यार्थ होगा - घूमने को चलने का समय हो गया।

व्यंग्यार्थ का ज्ञान प्रसंग से ही होता है। उदाहरण के अनुसार अनेक अर्थ हो सकते हैं। जैसे -

संध्या-वन्दन करने का समय हो गया।
घर चलने का समय हो गया।
सिनेमा चलने का समय हो गया।
पाठ बंद करने का समय हो गया।